

वास्तविकता आदर्शों के अनुरूप नहीं होती है, बल्कि इसकी पुष्टि करती है

असफलता तभी आती है जब हम अपने आदर्शों, उद्देश्यों और सदिधांतों को भूल जाते हैं

—जवाहरलाल नेहरू

वास्तविकता और आदर्श के बीच का संबंध **दर्शन, कला और वजिज्ञान में एक चरिकालिक प्रश्न रहा है**। वास्तविकता प्रायः हमारे आदर्श दृष्टिकोण से वचिलति होती दिखाई देती है, यह एक साथ इन आदर्शों के अस्तित्व और आवश्यकता को मान्य करने का कार्य करती है। वास्तविकता, अपनी जटिलता और अपूर्णताओं में, हमारे आदर्शों के अनुरूप नहीं है, बल्कि उनकी **प्रासंगिकता और महत्त्व की पुष्टि करती है**।

दर्शनशास्त्र लंबे समय से **वास्तविक और आदर्श के बीच तनाव से जूझ रहा है**। प्लेटो का अनुकरण सदिधांत इस संबंध की सबसे प्रारंभिक और सबसे प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है। प्लेटो के अनुसार **भौतिक विश्व एक उच्च वास्तविकता की परचिछाया** है जो परिपूर्ण, अपरवर्तनीय रूपों या आदर्शों से निर्मित है। दैनिक जीवन में हम जनि वस्तुओं का सामना करते हैं, वे इन अनुकरणों की अपूर्ण प्रतियाँ हैं। उदाहरण के लिये एक वशिष्ट वृक्ष "वृक्ष" के आदर्शों का अपूर्ण प्रतिनिधित्व है।

भौतिक वृक्ष आदर्श रूप का अनुकरण नहीं है, इसका अस्तित्व इसे समझने और वर्गीकृत करने के लिये विभिन्न रूपों की आवश्यकता की पुष्टि करता है। अलग-अलग वृक्षों में हम जो खामियाँ और विविधताएँ देखते हैं, वे **रूपों की वैचारिक पूर्णता और सार्वभौमिकता** को उजागर करती हैं। इस प्रकार वास्तविकता, वास्तविक दुनिया में देखी गई **खामियों को समझने के लिये अपने वैचारिक ढाँचे** की आवश्यकता के द्वारा आदर्शवाद की पुष्टि करती है।

इमैनुअल कांट ने इस विचार को आगे बढ़ाते हुए तर्क दिया कि मानव संज्ञान अनुभव हेतु पूर्व अवधारणाओं और आदर्शों पर निर्भर करता है। कांट के अनुसार हम कभी भी **"थिंग-इन-इटसेल्फ"** (वास्तविकता का सच्चा सार) को पूर्ण रूप से नहीं समझ सकते हैं, दुनिया के बारे में हमारी समझ कार्य-कारण और समय जैसे आदर्शों द्वारा मध्यस्थता करती है। ये आदर्श सीधे अनुभवजन्य दुनिया के अनुरूप नहीं हैं; इसके बजाय ये हमारी अवधारणा और इसकी पुष्टि को आकार देते हैं। वास्तविकता, आदर्शों के प्रति विपरीत अनुभव को समझने के लिये इन संज्ञानात्मक आदर्शों की आवश्यकता की पुष्टि करती है।

साहित्य और कला भी वास्तविकता और आदर्श के बीच की गतिशीलता को बताते हैं। इन क्षेत्रों में आदर्श प्रायः **एकत्रैतिक, साँदर्यवादी या सामाजिक आकांक्षा** का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके विरुद्ध वास्तविकता को मापा जाता है। वास्तविक और आदर्श के बीच तनाव एक प्रभावशाली कथन और विषयगत उपकरण बन जाता है।

भारतीय साहित्य में, **मुंशी प्रेमचंद** एक उल्लेखनीय लेखक हैं जिन्होंने **20 वीं सदी के आरंभिक ग्रामीण भारत** की कठोर वास्तविकताओं को चित्रित किया है। प्रेमचंद की रचनाएँ सामाजिक आदर्शों और उनके समय की कठोर वास्तविकताओं के बीच तीव्र विरोधाभासों को दर्शाती हैं। उपन्यास **"गोदान"** एक गरीब किसान होरी के संघर्षों को दर्शाता है, जो अपने परिवार के जीवन को बेहतर बनाने के लिये गाय रखने का सपना देखता है। जमींदारों, साहूकारों और सामाजिक दबावों द्वारा शोषण की कठोर वास्तविकताओं को मार्मिक तरीके से दर्शाया गया है। गंभीर वास्तविकता के बावजूद, **यह उपन्यास की सादगी, दृढ़ता और नैतिक अखंडता** के आदर्शों को रेखांकित करता है। दुर्गम चुनौतियों के बावजूद भी होरी की निरंतर आशा और गरमा आदर्श ग्रामीण जीवन और शोषण और गरीबी की क्रूर वास्तविकता के बीच असमानता को उजागर करती है। प्रेमचंद इस विरोधाभास का उपयोग सामाजिक अन्याय की आलोचना करने और करुणा एवं सुधार का समर्थन करने के लिये करते हैं।

भारतीय दृश्य कला में वास्तविकता और आदर्श के बीच तनाव को विभिन्न आंदोलनों और व्यक्तिगत कलाकारों के माध्यम से स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है, जिन्होंने भारतीय जीवन और इसकी सामाजिक गतिशीलता का अनुसरण किया है। दो उल्लेखनीय उदाहरण बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट और प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप की कृतियाँ हैं।

बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट 20 वीं सदी की शुरुआत में पश्चिमी अकादमिक स्थापत्य शैलियों के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में उभरा। इसका उद्देश्य भारतीय परंपराओं और साँदर्यशास्त्र को पुनर्जीवित करना, भारत के अतीत, आध्यात्मिकता और प्रकृतिको आदर्श बनाना था।

अबनदिरनाथ टैगोर जैसे कलाकारों ने भारतीय पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और ग्रामीण जीवन के दृश्यों को चित्रित किया, प्रायः इन विषयों को रोमांटिक और आदर्श बनाया। उदाहरण के लिये उनकी पेंटिंग **"भारत माता" (मदर इंडिया)** भारत की एक मानवीकृत, आदर्श दृष्टि प्रस्तुत करती है, जो एक पोषण करने वाली माँ की छवि प्रस्तुत करती है, जो **पवित्रता और बलदान** का प्रतीक है। बंगाल स्कूल ने इन आदर्शों पर ध्यान केंद्रित किया, यह औपनिवेशिक उत्पीड़न और सामाजिक मुद्दों की वास्तविकताओं से पूर्ण रूप से अछूता नहीं है। आदर्शवादी दृष्टि ने **सांस्कृतिक और राष्ट्रीय कायाकल्प** के लिये एक आह्वान के रूप में कार्य किया, जो देश के गौरवशाली अतीत और औपनिवेशिक शासन के तहत इसकी वर्तमान स्थिति के बीच अंतर को उजागर करता

है। यह रोमांटिक चित्रण वरिध का एक रूप था, जो सांस्कृतिक पहचान और स्वतंत्रता के मूल्य की पुष्टि करता था।

राजनीतिक क्षेत्र में वास्तविकता और आदर्शों के बीच का संवाद गहन और विवादास्पद दोनों है। राजनीतिक विचारधारणें प्रायः न्याय, समानता और स्वतंत्रता के आदर्शों पर आधारित हैं। हालाँकि इन आदर्शों के कार्यान्वयन को वास्तविक दुनिया के शासन की जटिलताओं और खामियों से हमेशा चुनौती मिलती रही है।

लोकतांत्रिक आंदोलनों का इतिहास इस गतिशीलता को दर्शाता है। लोकतंत्र का आदर्श एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था की कल्पना करता है जहाँ सत्ता शासकों की सहमति से प्राप्त होती है, जहाँ सभी व्यक्तियों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त होते हैं। फरि भी लोकतांत्रिक समाजों की वास्तविकता अक्सर इस आदर्श से कम हो जाती है, जो भ्रष्टाचार, असमानता और राजनीतिक ध्रुवीकरण जैसे मुद्दों से प्रभावित होती है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में से एक **महात्मा गांधी** ने **अहिंसा और सत्य** के आदर्शों का समर्थन किया। भारत के लिये उनका दृष्टिकोण स्वराज, समानता और सामाजिक सद्भाव के सिद्धांतों पर आधारित था।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की वास्तविकता शोषण, नस्लीय भेदभाव और आर्थिक अभाव से चिह्नित थी। गांधी के विभिन्न अभियानों, जैसे **दांडी मार्च और भारत छोड़ो आंदोलन**, ने इन अन्यायों को उजागर किया और औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष करने के लिये जनता को संगठित किया। जो गांधी के आदर्श उपनिवेशवाद की दमनकारी वास्तविकता के बलिकूल विपरीत थे। उदाहरण के लिये **दांडी मार्च** केवल नमक कर के खिलाफ वरिध नहीं था, बल्कि ब्रिटिश सत्ता के संपूर्ण ढाँचे को चुनौती देने वाला एक प्रतीकात्मक कार्य था। अहिंसा और सविनय अवज्ञा के आदर्शों को अपनाकर, गांधी ने औपनिवेशिक शासन के नैतिक विवादास्पदता को उजागर किया। आदर्श और वास्तविकता के बीच इस तनाव ने लाखों भारतीयों को स्वतंत्रता एवं सामाजिक सुधार हेतु प्रयास करने के लिये प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः वर्ष 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली।

इसी प्रकार वैश्विक राजनीतिक संदर्भ में, सार्वभौमिक मानवाधिकारों का आदर्श प्रायः **युद्ध, उत्पीड़न और नरिधनता** की कठोर वास्तविकताओं का सामना करता है। संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय निकाय इन आदर्शों को बनाए रखने का प्रयास करते हैं, भले ही वास्तविक दुनिया की घटनाएँ बार-बार उनकी सीमाओं को उजागर करती हों। मानवाधिकारों के उल्लंघन का जारी रहना आदर्शों को नरिधक नहीं बनाता है; बल्कि यह प्रगति के मानदंड और उनका समर्थन एवं उसमें परिवर्तन के उपकरण के रूप में इन आदर्शों की तत्काल आवश्यकता की पुष्टि करता है।

विज्ञान भी वास्तविक और आदर्श के बीच के अंतरसंबंध का उदाहरण है। वैज्ञानिक पद्धति विस्तृत सत्य की खोज और सिद्धांतों के निर्माण पर आधारित है जिसका उद्देश्य प्राकृतिक घटनाओं का सटीक वर्णन और भविष्यवाणी करना है। हालाँकि विज्ञान की अनुभवजन्य प्रकृति का अर्थ है सिद्धांतों को प्राकृतिक दुनिया की अव्यवस्थित और दुरुद्ध वास्तविकता के वरिध नरिधत नगिरानी रखी जानी चाहिये।

उदाहरण के लिये **न्यूटनियन यांत्रिकी** के विकास पर विचार करें तो आइजक न्यूटन ने **17 वीं शताब्दी** में गति और सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण के नियमों को तैयार किया, जिससे एक ऐसा ढाँचा तैयार हुआ जो उल्लेखनीय सटीकता के साथ वस्तुओं की गति की भविष्यवाणी कर सकता था। ये नियम दुनिया के एक आदर्श दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते थे, जहाँ बलों और गतियों को सटीक गणितीय संबंधों के साथ वर्णित किया जा सकता था। हालाँकि जैसे-जैसे वैज्ञानिकों ने अधिक प्रयोग किये और अधिक सटीक अवलोकन किये, विशेष रूप से बड़ी वस्तुओं (जैसे ग्रह) या बहुत छोटी वस्तुओं (जैसे उप-परमाणु के कणों) के पैमाने पर, उन्होंने ऐसी घटनाएँ खोजीं जिनमें **न्यूटनियन यांत्रिकी** समझा नहीं सकती थी। **आदर्श (न्यूटन के नियम) और वास्तविक (अनुभवजन्य अवलोकन)** के बीच इस विसंगति ने नए सिद्धांतों के विकास को जन्म दिया।

जीव विज्ञान के क्षेत्र में एक पूर्ण रूप से अनुकूलित जीव का आदर्श अक्सर आनुवंशिक उत्परिवर्तन और पर्यावरण परिवर्तनों की वास्तविकता से कमतर आँका जाता है। **चार्ल्स डार्विन** द्वारा प्रस्तावित प्राकृतिक चयन द्वारा विकास का सिद्धांत, इस अपूर्णता को यह समझाकर स्वीकार करता है कि अनुकूलन कैसे एक नरिधत, अपूर्ण प्रक्रिया है जो अस्तित्व और प्रजनन की वास्तविकताओं से प्रेरित है। प्रकृति में देखी गई अपूर्णताएँ जैविक आदर्शों की गतिशील और अनंतमि प्रकृति की पुष्टि करती हैं, सिद्धांत और अनुभवजन्य वास्तविकता के बीच नरिधत परस्पर क्रिया को रेखांकित करती हैं।

नैतिकता, किसी भी अन्य क्षेत्र से अधिक, वास्तविकता और आदर्श के बीच जटिल संबंधों को दर्शाती है। **ईमानदारी, करुणा और न्याय** जैसे नैतिक आदर्श एक नैतिक ढाँचा प्रदान करते हैं जिसके आधार पर मानव व्यवहार का मूल्यांकन किया जाता है। हालाँकि मानव व्यवहार की वास्तविकता अक्सर इन आदर्शों से कम होती है, जिसकी वरिधता है **स्वार्थ, क्रूरता और अन्याय**।

यह विसंगति नैतिक दर्शन और नैतिक व्यवहार पर केंद्रित है। **अरस्तू और कांट** जैसे दार्शनिकों ने तर्क दिया है कि नैतिक आदर्श आकांक्षात्मक लक्ष्यों के रूप में कार्य करते हैं जो मानव आचरण का मार्गदर्शन करते हैं। अरस्तू की सद नैतिकता की अवधारणा सद्गुणों की खोज के माध्यम से नैतिक चरित्र के विकास पर बल देती है, भले ही व्यक्ति अपनी नैतिक कमियों से जूझ रहा हो। दूसरी ओर कांट की कर्तव्यपरायण नैतिकता यह मानती है कि नैतिक सिद्धांत परिणामों की परवाह किये बिना बाध्यकारी हैं, जो कर्तव्य और तर्कसंगतता के अनुसार कार्य करने के महत्त्व पर बल देते हैं।

नैतिक आदर्शों का वास्तविक दुनिया में अनुप्रयोग विभिन्न सामाजिक आंदोलनों और कानूनी ढाँचों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिये नस्लीय शोषण की जड़ जमाए आदर्श वास्तविकता के बावजूद, **दासता का उन्मूलन मानव समानता के नैतिक आदर्श** से प्रेरित थे। इसी प्रकार **लैंगिक समानता, पर्यावरण न्याय और पशु अधिकारों** के लिये समकालीन आंदोलन मौजूदा सामाजिक प्रथाओं को चुनौती देने और बदलने के लिये नैतिक आदर्शों पर आधारित हैं।

वास्तविकता और आदर्श के बीच का संबंध एक गहन और स्थायी तनाव से चिह्नित है। वास्तविकता, अपनी अंतरनिहित खामियों और जटिलताओं के साथ, प्रायः हमारे आदर्शों के अनुरूप नहीं हो पाती है। फरि भी यही वफिलता इन आदर्शों की प्रासंगिकता और आवश्यकता की पुष्टि करती है। चाहे दर्शन, साहित्य, राजनीति, विज्ञान या नैतिकता में, आदर्श एक बेंचमार्क के रूप में कार्य करता है जिसके आधार पर वास्तविकता को मापा जाता है, उसकी आलोचना की जाती है और अंततः उसे रूपांतरित किया जाता है।

यह स्वीकार करते हुए कि वास्तविकता आदर्श के अनुरूप नहीं है, बल्कि इसकी पुष्टि करती है, हम समझ, न्याय और प्रगति की मानवीय खोज में मार्गदर्शक सतारों के रूप में आदर्शों की भूमिका को पहचानते हैं। वास्तविक और आदर्श के बीच यह गतिशील अंतर्क्रिया हमें एक बेहतर दुनिया के लिये निरंतर प्रयास करने की चुनौती देती है, भले ही हम जसि दुनिया में रहते हैं उसकी खामियों और सीमाओं से जूझते हों। इसी प्रयास के माध्यम से मानवीय क्षमता का एहसास होता है और आदर्श का वादा परणाम के करीब होता है।

वास्तविकता केवल एक भ्रम है, यद्यपि बहुत स्थायी है

—अल्बर्ट आइंस्टीन

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/reality-does-not-conform-to-the-ideal-but-confirms-it>

